

કરકુરશુબહાત ફિ તૌહીદ

(તૌહીદ સે સંબંધિત સન્દેહો કા નિવારણ)

તાલીફ : શૈખુલ ઇસ્લામ મુહમ્મદ બિન અબ્દુલ વહ્હાબ અત્તમીમી
(રહ્મતુલ્લાહિ અલૈહ)

ઉર્દૂ તર્જુમા : અબુલ મુર્કરમ અબ્દુલ જલીલ

નઝરેષાની : મુશ્તાક અહ્મદ કરીમી

ગુજરાતી લિપિયાંતર : મુહમ્મદ ફાઝલ ઉષ્માન ખત્રી



ઇસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર - કચ્છ

Mo. : 84017 86172 | www.iickutch.blogspot.in

इंहरिस्त INDEX

नंभर शुभार	उन्पानात	सङ्हा नंभर
१	मुकद्दमा	२
२	अम्बियाअ की बेअ्षत का बडा मद्सद	३
३	तोहीदु रुबूबियत और मुशिरकीन का अकीदह	४
४	कलिमह अे तोहीद का मद्हूम (मतलब)	५
५	तोहीद के इवाधद	७
६	अम्बियाअ के दुश्मन	८
७	दीने इस्लाम जानना झर्री है	८
८	शुबहात का ज्पाब	९
९	गेरुल्लाह से इस्तिगाषह कुङ् है	१३
१०	पुकारना भी इबादत है	१३
११	कुर्बानी करना भी इबादत है	१४
१२	शक्कात बरहक्क है	१५
१३	शक्कात कुबूल करना सिई अल्लाहतआला का हक्क है	१५
१४	सालिहीन की पनाह दूढना शिर्क है	१६
१५	शिर्क क्या है ?	१८
१६	रुबूबियत का इकरार और उलूहियत का इन्कार	१८
१७	कुङ् क्या है ?	२०
१८	शरीअत की मुजालिइत का नतीजह	२२
१९	इहमे दीन झर्री है	२५
२०	जबर की तह्कीक झर्री है	२८
२१	इस्तिगाषह का मद्हूम (मतलब)	२८
२२	तोहीद की अमली ततबीक	३०

मुकद्दमा

अल् हम्दुलिल्लाहि वह्हह, वस्सलातु वस्सलामु अला मल्ला नबिच्य
बअ्हह व अला आलिही व सहबिही, अम्मा बअ्ह.

तमाम तअ्रीकें उस अल्लाह रब्बुल रब्बुल के लिअे हें जो सारे जहानों
का रब (परवर्दिगार) हें और जेरवाला अंजाम मुत्तकीयों के लिअे हें और द३द
नाजिल हों उस के बंदे और रसूल, हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम पर और उन की आल व ओलाद और तमाम सहाबह अे किराम
रदियल्लाहुअन्हुम पर, अम्मा बअ्ह.

ये मुप्तसर किताब “कश्कुशुबहात डि त्तोहीद” के उर्दू तर्जमे का
गुजराती लिपियांतर हें. जो शैजुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब
रहमतुल्लाहि अलैहि की मशहूर किताबों में से अेक किताब हें. जो त्तोहीद के बारे में
शक व शुबहात को दूर करने का लाजवाब नमूनह हें. इस मुप्तसर और जामेअ
(मुकम्मल) किताब में शैजुल इस्लाम रहमतुल्लाहि अलैहिने त्तोहीद से
मुतअल्लिक आम और भास लोगों में कैंले हुअे शक शुबहात (वहम, गुमान) दूर
किये हें और अपनी झइदिमंद नसीहतों को दो हिस्सों में तक्सीम किया हें.

पेहला हिस्सह : शिर्क की सहीह तअ्रीक और ये के हर दौर में असल
शिर्क ओलियाअ व सालिहीन को बतोरें वसीलह पुकारना और उन से मदद
मांगना ही रहा हें न के सिई लकडी, पथर के जुतों को पूजना.

दूसरा हिस्सह : कलिमहगो मुश्रिकीन की शरइ हैषियत और उन की
मुश्रिकीने मक्कह और मुसैलमह कज्जाब के पैरोकारों (पेरवी करनेवालों) के साथ
मुनासबत (निस्बत, बराबरी).

अे अल्लाह ! हमें हक्क को हक्क कर के दिजा और उस की पेरवी करने की
तोड़ीक अता इरमा और हमें बातिल (जूट) को बातिल कर के दिजा और उस से
बचने की तोड़ीक अता इरमा आमीन... या रब्बल् आलमीन.

व सल्लल्लाहु व सल्लम अला नबिच्यना मुहम्मदिन् व आलिही व
सहबिही.(अल्लाह की रहमत और सलामती हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु
अलैहि व सल्लम पर और उन की आल -व ओलाद- और तमाम सहाबह अे
किराम रदियल्लाहुअन्हुम पर)

नोट : इस किताब में मुकद्दमह, पञ्चाहत और मुश्किल अल्फ़ाज़ का आसान मतलब उर्दू किताब “अकीदेह के बारे में शुक्क व शुबहात का इत्ज़ालह” का हिस्सह नहीं.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्हीम

अम्बियाअ की बेअ्पत (लेजने) का बडा मक्सद

(ये जान लें के) अक अल्लाह रब्बुल इत्ज़त की इबादत करने और किसी को उस इबादत में शरीक न करने का नाम “तोहीद” है. यही तमाम अम्बिया का दीन रहा है. जिस की तअलीम दे कर अल्लाहतआलाने अम्बिया को अपने बंटों के पास लेजा.

सब से पेहले रसूल नूह अलैहिस्सलाम हैं. उन की कौमने पद्द, सुपाअ, यगूष, यउक और नस्र जैसे सालिहीन के बारे में जब गुलू करना (हद से गुज़रना) शुअ किया तो अल्लाहतआलाने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को उन की हिदायत के लिअे लेजा और सब से आज़री रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं जिन्होंने मज़्फूरह (उन) बुज़ुर्गों के मुजस्समों (मूर्तियों) का जातिमह इरमाया (जल्म किया). ★(पञ्चाहत : सूरह नूह की आयत २३ की तक्सीर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं के ये पांचो नाम हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कौम के नेक लोगों के नाम थे. जब उन की मौत हो गइ तो शैतानने उन के दिल में डाला के अपनी मजलिसों में जहां वह बैठते थे उन के बुत काइम कर लें और उन बुतों के नाम अपने नेक लोगों के नाम पर रखलें, तो उन लोगोंने ऐसा ही किया. उस पक्त् उन बुतों की पूजा (इबादत) नहीं होती थी. लेकिन जब वह (कौम के) लोग मर गअे जिन्होंने बुत काइम किये थे और इल्म लोगों में न रहा तो उन की पूजा होने लगी. -सहीह बुजारी : तक्सीर सूरह नूह). आप जिस कौम की तरफ़ लेजे गअे वह लोग अल्लाहतआला की इबादत और बंदगी और उसका ठिक करते थे, हज़्ज और सदकात व जैरात ली करते थे लेकिन इस के साथ ही वह अपने और अल्लाहतआला के दर्मियान बुज़ुर्गों और बअ्ज़ मज्लूक मषलन इरिशते, इसा अलैहिस्सलाम, मर्यम अलैहास्सलाम या दूसरे नेक लोगों को वास्तह बनाते

और ये केहते थे के उन के ऋरीअे हम अल्लाहतआला का तर्कुरुज हासिल करना चाहते हैं और अल्लाहतआला के यहां एन बुजुर्गों की शफ़ाअत के उम्मीदवार हैं. ऐसे हालात में अल्लाहतआलाने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा ताके आप एब्राहीम अलैहिस्सलाम के दीन की तजदीद इरमाअें (नये सिरे से उन के सामने रब्जें) और लोगों पर ये वाज़ेह कर दें के ये तर्कुरुज और अेअ्तिकाद (भरोसा) सिई अल्लाहतआला का हक्क है किसी ओर का ठिक ही क्या किसी मुक़र्रब इरिशते या रसूल के बारे में भी ये अकीदह नहीं रब्जा जा सकता.

तौहीदे रुबूबियत और मुश्रिकीन का अकीदह

मुश्रिकीने मक्कह एस बात का एकरार करते थे के अल्लाहतआला ही मालिक और राज़िक है, वही मारता और ज़िलाता है. वही काएनात का मालिक व मुतसर्रिक् (एज्जियार, काबु में रब्जनेवाला) व ऋमीन और उन में बसने वाले सब उस के बंटे और उस की मातेहत (गुलाम) हैं, जैसा के अल्लाहतआला उन के बारे में इरमाता है : “पूछो तो सही तुम को आस्मान और ऋमीन से कौन रोज़ी देता है ? और कानों और आंभों का कौन मालिक है ? और मुट्टे से ठिन्टह और ठिन्टे से मुट्टा कौन निकालता है ? और दुन्या के कामों को कौन चलाता है ? तो एस के जवाब में ये मुश्रिक ऋइर कहेंगे के अल्लाह, फिर तुम पूछो के फिर शिर्क से क्युं नहीं बचते ?” (सूरह यूनुस आयत : 31)

दूसरी जगह अल्लाहतआलाने इरमाया : “एन से पूछो ऋमीन और जो कुछ उस में है किस की है ? अगर तुम जानते हो ? वह ऋइर यही कहेंगे के अल्लाह की है, कहो फिर तुम गौर क्युं नहीं करते ? एन से पूछो के सातों आस्मान का मालिक कौन है ? और बडे तप्त (अर्शे अज़ीम) का मालिक कौन है ? वह ऋइर यही कहेंगे के अल्लाह, कहो फिर तुम उस से क्युं नहीं डरते ? एन से पूछो अगर तुम जानते हो तो बताओ के किस के हाथ में हर चीज़ की हुक्मत है ? और वह बचा लेता है और उस से कोए नहीं बचा सकता वह ऋइर कहेंगे के अल्लाह के हाथ में है, फिर तुम कहां लटक रहे हो !”

(सूरह मुअ्मिनून आयत : ८४ से ८८ तक)

मुश्किनीन धन तमाम चीजों का धकार करते थे और रात दिन अल्लाहतआला को पुकारते ली थे, मगर जो तोहीट रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेकर आये थे यअनी तोहीटे उलूहियत और जिसे हमारे दौर के मुश्किनीन “अेअ्तिकाट” केहते थे उस का उन्होंने धन्कार किया धस लिअे वह अल्लाहतआला की धबादत से धन्कार करनेवाले शुमार हुअे.

बअ्ळ मुश्किनीन अैसे ली थे जो इरिशतों को पुकारते ताके ये इरिशते अल्लाहतआला के मुर्कब (करीब, पास) होने के नाते उन की शफाअत कर दें, या किसी बुखुर्ग धन्सान मषलन् लात या किसी नबी मषलन् धसा अलैहिस्सलाम को पुकारते थे. ★(पञाहत : लात नाम का अेक जुत था धस के धलापह दो और जुत उञ्जा और मनात थे. ये अरब के मुश्किनीन के तीन मशहूर जुत थे, जिन की वह धबादत (पूजा) करते थे. धन जुतों का ठिक कुर्आने करीम में ली आया है, जैसा के धशाटि धलाही है : “कया तुमने लात और उञ्जा को देजा ! और तीसरे आभरी मनात को !” (सूरह नज्म आयत : १८, २०) धन जुतों के बारे में मुप्तसर तक्सील ये है. लात : ये सडेह रंग का अेक पथर था जो अेहले ताधक् का मअ्बूह था. उञ्जा : ये मक्कह और ताधक् के धर्मियान अेक दरप्त था बअ्द में तीन दरप्तों पर धभारत ढडी कर दी गध. और तीसरा मनात : ये मुश्किनीन का जुत था जो मक्कह और मदीनह के धर्मियान में था.- धब्ने कधीर).

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने धस शिक पर उन मुश्किनीन से ढिताब किया और उन्हें अेक अल्लाहतआला की धबादत की तरक् जुलाया, जैसा के कुर्आने करीम बयान करता है : “मस्जिहें अल्लाह ही की धबादत के लिअे हैं, तो अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो.”

(सूरह जिन्न आयत : १८)

दूसरी जगह धशाटि इरमाया : “ अल्लाह ही की पुकार सअ्थी पुकार है और जिन को ये अल्लाह के सिपा पुकारते हैं वह उन का कुछ काम नहीं निकाल (कर) सकते.” (सूरह अर्राट आयत : १४)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने मुश्किनीन से धस बात पर किताल किया (जंग की) के पुकारना, ञबह करना, नञर व न्याञ, मधट तलब करना और हर किस्म की धबादत सिई अल्लाहतआला के लिअे हो, सिई तोहीटे रुबूबियत का धकार उन्हें शिक से निकाल कर धस्लाम में धाढिल नहीं कर

सकता, मलाईकह (इरिशते) और ओलियाअ को पुकारने और उन्हें अल्लाहतआला के यहां सिफारशी समजने की वजह से उन के जान व माल की हिफाजत ईस्लामने अपने जिम्मे न ली.

कलिमह ऐ तौहीद का मद्द्म (मतलब)

मद्द्ूरह तस्लील के बअद् एस तौहीद की हकीकत पाउंहे हो जाती है जिस की दअ्पत अम्बिया व रुसुलने दी और कलिमह “ला एलाह एल्लल्लाह” का मतलब भी यही है, जिस का एंकार मुश्रिकीनने किया.

मुश्रिकीन “एलाह” से जालिक व रात्रिक और मुदब्बिर (काएनात का एन्तजाम करनेवाला) मुराद नहीं लेते थे, क्युंके वह जानते थे के जालिक व रात्रिक और मुदब्बिर सिई अल्लाहतआला है बल्के “एलाह” उन के नद्दीक वह जात होती थी जिसे वह अल्लाहतआला का करीबी या अल्लाहतआला के यहां सिफारशी या अपने और अल्लाहतआला के दर्भियान वास्तह समज कर उस की तरफ् रुजूअ करते, ज्वाह (याहे) वह इरिशते हो या नबी, पली हो या दरभ्त, कबर हो या कोए जिन्न.

अल्लाहतआला के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने उन्हें कलिमह ऐ तौहीद “ला एलाह एल्लल्लाह” की दअ्पत दी. एस कलिमह का मतलब सिई अल्फाज का एंकार नहीं बल्के उस का मअ्नी व मतलब मुराद था. जहिल काइर जानते थे के एस कलिमह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुराद ये है के सिई अल्लाहतआला की जात से तअल्लुक रज्जा जाअे. एस के एलापह पूजा की जानेवाली तमाम चीजों का एंकार उन से बराअत (दूरी) का ऐअ्लान कर दिया जाअे . यही वजह थी के अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने जब उन से “ला एलाह एल्लल्लाह” केहने का मुतालजा किया (मांग की) तो उन्होंने ज्वाब दिया : “क्या उसने (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने) सब मअ्बूदों को ऐक मअ्बूद कर दिया, ये तो बडी अनोजी बात है.” (सूरह साद आयत : १५)

ये जानने के बअद् अनपढ काइर भी एस कलिमे का मतलब जानते थे. उन लोगों पर बडा तअज्जुब होता है जो ईस्लाम के दावेदार हैं और कलिमह ऐ तय्यिबह का एतना भी मतलब नहीं जानते जितना जहिल कुइर जानते थे, बल्के ये समजते हैं के मअ्नी व मद्द्म का टिल में अकीदह रज्जे बगैर सिई

अल्फ़ाज़ अदा कर लेना ही काफ़ी है. उन में जो क्रियाएँ समझदार अकलमंद माने जाते हैं वह इस कलामे का मतलब ये समझते हैं के जालिक व रात्रिक और कायनात का इन्तिज़ाम करनेवाला सिर्फ़ अल्लाहतआला है. झाहिर बात है के उस शब्स से ललाय की क्या तपक्कुम् (उम्मीद) हो सकती है जिस से जाहिल कुक्कार “ला इलाह इल्लल्लाह” का मतलब क्रियाएँ जानते थे.

जब आपने मज़हूरह तक्सीलात समझ लीं और उस शिर्क को जान लिया जिस के बारे में अल्लाहतआला का इर्शाएँ है : “अल्लाह शिर्क को बप्शाने वाला नहीं अल्बत्ता शिर्क के सिवा जो गुनाह हैं उन्हें जिस के लिअे चाहे बप्शा दे.” (सूरह निसा आयत : ४८)

तौहीद के इवायद

ये जान लेने के बअद तमाम अम्बियाअे किराम का दीन कौनसा है, जिस के इलावह कोय भी दीन अल्लाहतआला के यहां काबिले कुबूल नहीं और ये के आज लोगों की अक्षरीयत इस दीन से किस कदर गाइल और जाहिल है, दो अहम इाईएँ आप को हासिल होंगे.

(१) अल्लाहतआला के इज़्ल व रहमत पर भुशी :

जैसा के अल्लाहतआला का इर्शाएँ है : “अे पैगम्बर ! केहदो, अल्लाह के इज़्ल व रहमत पर भुशा हों, इन ही दो चीज़ों पर भुशा होना चाहिये, ये उस से बेहतर है जो वह समेटते हैं.” (सूरह यूनुस आयत : ५८)

(२) अल्लाहतआला का जौड़ और डर :

अल्लाहतआला का जौड़ उस पक्त्त और क्रियाएँ होगा नीज़ राहे नजात की ज़ुस्तजू मज़ीद हो (तलब बड जाअेगी) जब आप ये जान लें के बसाओकात (बहुत बार) इन्सान के मुंह से निकला हुवा अेक लक्ज़ उसे कुक्कर तक पहुंचा देता है . कभी तो उस के मुंह से नादानी व जहालत में ये लक्ज़ निकल जाता है और जहालत की वजह से वह मअज़ूर (मजबूर) नहीं समझा जाअेगा और कभी ये समझ कर वह अैसी बात बोल जाता है के ये चीज़ उसे अल्लाहतआला से क़रीब कर देगी, जैसा के मुश्रिकीन का अकीदह था. इस सिल्सिले में जासतोर पर मूसा अलैहिस्सलाम की कौम का वाकिआ सामने रब्बों के इन्होंने इल्म व इज़्ल और सलाह (नेकी) व तक्वा के बावजूद मूसा

अलैहिस्सलाम से मुतालबा किया : “अे मूसा (अलैहिस्सलाम) ! जैसे ँन लोगों के पास मअ्बूद हैं ऐसा ही अेक मअ्बूद हमारे ललअे ली बना ँ.”

(सूरह अअ्राइ आयत : १३ॢ)

अभलयाअ के दुश्मन

ये बात ली मद्दे नअर रभें (अन लें) के अल्लाहतआला की ये हलकमत रही है के उसने तौहीद की दअ्पत दे कर अलतने ली नली व रसूल लेजे उन अभलया व रसूल के दुश्मन ली पेदा इरमाअे जैसे के ँशादल नारी तआला है : “हमने ँस तरह शरीर (बुरे) आदमीयों और अलणों को हर पेगभर का दुश्मन बनाया, ँस ललअे के वह अेक दूसरे को मुलम्मअ्दार (अलकनी अुपडी) नार्ते इरेल के ललअे सलनार्ते.” (सूरह अअ्आम आयत : ११२)

ये दुश्मनाने तौहीद उलूम व मुआरलइ (ँल्म व समअदारी) और दलाँल व कुतुल से मुसल्लह (दलीलों और कलतानों से तैयार) ली हो सकते हैं. जैसे के अल्लाहतआला का ँशादल है : “अल उन के पेगभर उन के पास नलशानलयां ले कर आअे तो वह अपने ँल्म व ललयाकत (अूनी) पर कूलने (ँतराने) लगे.” (सूरह गारलर आयत : ॢ३)

दीने ँस्लाम अलनना अइरी है

अल आपने ये अन ललया के अल्लाहतआला की राह में दीन के दुश्मन ँहे हुअे हैं अे ँल्म व इसाहत (अअे नयान) और दलील व बुर्हन (अुल्ली दलील) से मुसल्लह (तैयार) ली हैं तो आप के ललअे अइरी हो अलता है के दीन का ँतनल ँल्म तो अइर हासलल करें अे दुश्मनाने दीन से लदने के ललअे काइी हो सके. अलन के पीर ँब्ललसने अल्लाह अअ्अ व अल्ल से कहा था : “में ली तेरी सीधी राह पर ँन की तक में ँहूंगा, इर ँन के पास ँन के आगे और ँन के पीछे से आअंगा और ँन की दलहनी तरइ से और ँन की नार्त तरइ से और तू अइषर आदमीयों को शुक गुअार नहीं पाअेगा.” (सूरह अअ्राइ आयत : १ॡ, १ॢ)

लेकलन अगर आप अल्लाहतआला से लें लगार्ते और उस की आयाते नयलनलत (रेशन दलीलों) पर कान धरें तो आप को कोँ अेक व गम नहीं

होना चाहिये क्युंके (ईशति ईलाही है) : “बेशक शैतान का मकर व इरेब बूदा (सप्त कळोर) है.” (सूरह निसाअ आयत : ७५)

अक आम मुपहिहद (तौहीद परस्त) मुश्किन के हळार उलमाअ पर लारी होता है. ईशति ईलाही है : “बेशक हमारा ही लशकर गालिब होगा.”

(सूरह साइफात आयत : १७३)

लिहाज्जा अल्लाहतआला का लशकर ही दअ्पते दीन और जिहाद के ङरीअे गालिब होता है. अलबत्ता भतरा उस मुपहिहद को है जो हथियार के बगैर राहे हक्क में निकल पडा हो. अल्लाहतआला का इज्ज व ईहसान है के उसने हमें ऐसी किताब अता इरमाई है जो हर चीज को बयान करनेवाली नीज मोमिनों के लिअे सरापा (मुकम्मल) हिदायत व रहमत और जुशजबरी है. अहले बातिल जो ली दलील लेकर आते हैं, ये किताब उस दलील को तोडती है और उस का बुतलान (जुटलाना) वाज्हे कर देती है. जैसा के कुआनि करीम का अेअ्लान है : “काइर जब कोई नया अेअ्तिराज कुआनि पर तेरे पास लाते हैं तो हम उस का सअ्या जवाब देते हैं और ईसी तरह मतलब जोलते हैं.”

(सूरह कुर्कान आयत : ३३)

बअ्ज मुइस्सिरीन का कौल है के ये आयत हर उस दलील के लिअे आम है जिसे अहले बातिल कियामत तक पेश करेंगे.

शुबहात का जवाब

हमारे ङमाने के मुश्किन हमारे जिलाइ जो दलीलें पेश करते हैं उन के जवाब में अल्लाहतआलाने कुआनि करीम के अन्दर जो बातें बयान इरमाई हैं, उन में से बअ्ज बातें हम आप के सामने रजते हैं.

अहले बातिल को जवाब दो तरीके से दिया जा सकता है. अक मुजमल (मुप्तसर) और दूसरा मुइस्सल (तइसीली) जवाब.

मुजमल जवाब समजबूज रजनेवालों के लिअे बडा ही गिरांकदर (कीमती) और इाईमंड है. अल्लाहतआला का इरमान है : “उसने तुम पर किताब उतारी, उस में से बअ्ज आयतें महकम हैं जो कुआनि की असल हैं और बअ्ज आयतें मुतशाबिह हैं तो जिन के दिलों में कज्ज (जराबी) है वह लोगों को गुमराह करने और असल हकीकत दरियाइत करने की निअ्यत से मुतशाबिह

आयतों के पीछे पड जाते हैं हालांकि उन की असल अल्लाह के सिवा कोय नहीं जानता.” (सूरह आलि इम्रान आयत : ७)

नीऊ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इशारे गिरामी है : “जब ऐसे लोगों को देखो जो कुर्आन की मुतशाबिह आयात के पीछे पडे हों तो समज लो के ये वही लोग हैं जिन का अल्लाहतआलाने कुर्आन में नाम लिया है. फिर इन से बचते रहो.” (तिर्मिज़ी)

अब अगर कोय मुशरिक आप से कहे के कुर्आन में अल्लाहतआलाने इरमाया : “सुन रफ्फो जो लोग अल्लाह के दोस्त हैं न उन को डर होगा न वह गम्गीन होंगे.” (सूरह यूनुस आयत : ५३)

या ये कहे के शक़ाअत बरहक़ है या ये कहे के अल्लाहतआला के यहां अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का बडा मक़ाम व मर्तबह है या अपने बातिल अकीदेह पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की किसी हदीष से इस्तिदलाल (दलील) करे और आप को हदीष का मअनी व मतलब मअलूम न हो तो इन तमाम सूरतों में आप उसे सीधा सा जवाब दे दें के अल्लाहतआलाने कुर्आन में बयान इरमाया है के जिन के दिलों में कज्ज होती है वह महक़म आयतों को छोड कर मुतशाबिह आयतों के पीछे पडे रहेते हैं, नीऊ गुज़िशता सफ़हात (अगले पन्नों) में ये बात बयान हो चुकी है के मुशरिकीन तोहीदे रुबूबियत का इकरार करते थे लेकिन इस वजह से वह काफ़िर करार पाये के उन्होंने मलाइकह, अम्बिया और ओलिया से लो लगाइ और उन के बारे में ये अकीदेह रफ़्फा के : “ये अल्लाह के यहां हमारे सिफ़ारशी हैं.” (सूरह यूनुस आयत : १८)

मअक़ूरुआ बातें बिल्कुल पाळेह और अमरे महक़म (पुप्तह, पक़े हुक़म) की हैषियत रफ़ती हैं, किसी की मजाल (ताक़त) नहीं के वह इस में कोय तग़य्युर व तबदिल कर (मतलब बदल) सके.

लेकिन आपने जो कुर्आनी आयात या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीष बयान की है. में उस की वज़ाहत पूरी तरह तो नहीं कर सकता ताहम ये बात पूरे यकीन के साथ केह सकता हूं के अल्लाहतआला के क़लाम में कोय तआरुऊ (टकराप) नहीं और न रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़लामे इलाही (कुर्आन मज्जद) के जिलाइ कोय बात केह सकते हैं.

ये अक़ उम्दह जवाब है, इसे मअमूली न जानें, लेकिन इस जवाब की कदर व कीमत वही समज सकता है जिसे अल्लाहतआलाने तौडीक दी हो. उस की

हैषियत वही है, जैसा के अल्लाहतआलाने इरमाया है : “ये बात उन्ही को हासिल होती है जो सबर करते हैं और उन्ही को इस की तौफ़ीक होती है जो नसीबवाले हैं.” (सूरह कुस्सिलत आयत : 34)

मुइस्सल (तस्लील से) जवाब ये है के अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के दीन पर दुश्मनाने तौहीद को बेशुमार ऐअतिराज्जत हैं जिन के ऋरीअे वह लोगों को गुमराह करते हैं. उन का ये केहना के अल्लाहतआला के साथ शिर्क नहीं करते बल्के इस बात की शहादत देते हैं के मालिक व राजिक और नफ्अ व नुकसान का मालिक सिर्फ अल्लाहतआला है और ये के मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी अपने नफ्े व नुकसान के मालिक नहीं येहजाअे के अब्दुल कादिर रहमतुल्लाहि अलैहि या दूसरे बुजुर्ग हों. लेकिन र्चुंके हम गुनाहगार हैं और बुजुर्गों का अल्लाहतआला के यहां मकाम व मर्तबह है इस लिअे उन के वास्ते से हम अल्लाहतआला से सवाल करते हैं.

इस दलील का आप ये जवाब दें के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने जिन लोगों से किताल किया वह भी इन बातों का इकरार करते थे और ये केहते थे के इन के पास नफ्अ व नुकसान का इज्तिवार तो नहीं लेकिन हम इन के वास्ते से जाह व मर्तबह (उंचे दर्जे) और शफ्अत के तलबगार होते हैं. साथ ही आप उन्हें कुर्आन की आयतें पढ कर सुनाअें और उन की वज्जाहत करें.

इस पर अगर वह ऐअतिराज्ज करें के ये आयतें तो उन लोगों के बारे में नाजिल हुं हैं जो बुतों की परस्तिश (पूजा) करते थे. आप अम्बिया व सालिहीन को बुतों जैसा क्चुं बनाते हैं ? तो इस ऐअतिराज्ज का भी आप वही जवाब दें क्चुं के जब उन्होंने ये तस्लीम कर लिया के कुइर अल्लाहतआला की रुबूबियत का इकरार करते थे और अल्लाहतआला के इलावा जिन सालिहाअ व मलाइकह का वह कसद (इरादह) करते थे, उन से सिर्फ शफ्अत की उम्मीद रहते थे. इस के बावजूद उन को मुश्रिक करार दिया गया वाज्हे है के शफ्अत कुनिन्दह (शफ्अत करनेवाला) उन के नज्दीक भी अल्लाहतआला के कुछ नेक बंदे ही होते थे न के अस्नाम (बुत). गोया उस दौर में भी जिन की परस्तिश की जाती थी वह महज पथर की मूर्तियां ही नहीं थीं बल्के वह सालिहीन ही थे जिन के उन्होंने बुत तराश लिअे थे, तो अब उन्हें तस्लीम कर लेना चाहिअे के इत शूदह (वफात पा चुंके) सालिहीन को इज्तिवारत का हाभिल (ताकत रहनेवाला) समज कर उन से इस्तिगाथह व इस्तिग्दाह (मदद तलब) करना ही शिर्क है

जिन का धर्तिकाज ऋमानाये जाहिलियत में मुश्किनीन किया करते थे.

लेकिन मुअ्तरीकीन (मुजासिइत करनेवाले) अगर अपने और कुइर के अइआल (अअ्माल) में इर्क करना चाहें तो आप उन्हें बताएं के कुइर में कुछ तो ऐसे थे जो बुतों को पुकारते थे लेकिन कुछ ऐसे भी थे जो ओलिया को पुकारते थे जिन के बारे में अल्लाहतआला इरमाता है : “जिन लोगों को ये मुश्कि पुकारते हैं वह भुट अपने रज की तरइ ऋरीअह तलाश करते हैं के कौन अल्लाह से क्रियाइह करीब होता है.” (सूरह बनी इस्राइल आयत : ५७)

इसी तरह वह इसा अलैहिस्सलाम और मर्यम अलैहास्सलाम को भी पुकारते थे. जिन के बारे में अल्लाहतआला इरमाता है : “मर्यम (अलैहास्सलाम) के बेटे मसीह (अलैहिस्सलाम) इइत अेक पैगम्बर थे और उन की मां सिद्दीकह (वलिय्यह) थीं. दोनों जाना जाते थे. टेजो हम किस तरह इन के लिअे दलीलें बयान करते हैं, इर टेजो वह कैसे इरे जाते हैं. अे पैगम्बर (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) केह दो तुम अल्लाह को छोड कर ऐसे को पूजते हो जो न तुम्हारे बुरे का मालिक है, न लले का और अल्लाह ही सब कुछ सुनता जानता है.” (सूरह माइदह आयत : ७५, ७६)

आप इन के सामने ये आयतें भी पेश करें : “जिस दिन अल्लाह उन सब मुश्किों को अेकइा करेगा इर इरिशतों से इरमाअेगा क्या यही लोग तुम को पूजते थे ? वह कहेंगे इलाही ! तू हर अैब से पाक है. इन से हमें क्या काम. तू हमारा मालिक है (ये हम को नहीं) बल्के शैतान को पूजते थे. इन में अइधर लोग शैतानों को ही मानते थे.” (सूरह सबाअ आयत : ४०, ४१)

नीळ अल्लाहतआला का ये इरमान भी उन के सामने पेश करें : “याद करो जब अल्लाह इरमाअेगा, अे मर्यम (अलैहास्सलाम) के बेटे इसा (अलैहिस्सलाम) ! क्या तूने लोगों से ये कहा था के मुज को और मेरी मां को अल्लाह के सिवा मअ्बूद बना लो. वह कहेंगे, तू पाक है मुज से (ये) कहीं हो सकता है के मैं वह बात कहूं जो नाहकक है. अगर मैंने ये बात कही होगी तो ऋइर तुजे मअ्लूम होगी. तू मेरे दिल की बात जानता है. अल्लता मैं तेरे दिल की बात नहीं जानता. बेशक तू ही गैब की बातें जाननेवाला है.”

(सूरह माइदह आयत : ११६)

गैरुल्लाह से इस्तिगाथह कुइ है

इस की तस्लील के बअद आप मुअ्तरिअीन (मुजालिअत करनेवालों) से कहें के ऐजो अल्लाहतआलाने उन को भी काफ़िर करार दिया जे बुतों से इस्तिगाथह (मदद तलब) करते थे और उन को भी जे इस गरअ (मतलब) से ओलिया व सालिहाअ की तरफ़ रुजूअ करते थे और उन्ही लोगों से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने क़िताल किया।

इस पर अगर वह ये कहें के कुइअर बुतों की पूजा करते थे और उन से मांगते थे जब के हम इस बात का इकरार करते हैं के नइअ व नुकसान का मालिक और काइनात का मुदब्बिर सिई अल्लाहतआला है, हम उसी से मांगते हैं, ओलिया व सालिहीन को उस का इज्तिहार हासिल नहीं है। लेकिन हम इस लिअे उन की तरफ़ रुजूअ करते हैं के अल्लाहतआला के यहां वह हमारी सिइरिश कर दें।

इस ऐअ्तिराइ (मान लेने) पर आप उन्हें यही जवाब दें के आप की इस बात में और कुइअर के कौल में कोइ ईई नहीं है। साथ ही अल्लाहतआला का ये इरमान भी पड कर सुनाअें : “जिन लोगोंने अल्लाह के सिवा दूसरों को दोस्त बनाया है, वह केहते हैं के हम तो इन को बस इसी लिअे पूजते हैं के वह हम को अल्लाह के नअ्दीक कर दें।” (सूरह जुमर आयत : 3)

नीअ कुअनिे पाक का ये इरमान भी है : “मुश्रिक केहते हैं के ये अल्लाह के यहां हमारे सिइरशी होंगे।” (सूरह यूनुस आयत : १८)

मुश्रिकीन के ये तीन बडे बडे शुबहात (पहम, गुमान) हैं। जब आपने जान लिया के अल्लाहतआलाने कुअनि मअ्द के अंदर बडी पअाहत के साथ इन शुबहात को बयान इरमाया है और इर आपने अरछी तरह इन को समज लिया तो इन के इलावह जे भी शुबहात होंगे उन का जवाब कहीं क्रियादह आसान होगा।

पुकारना भी इबादत है

कोइ मुअ्तरिअ (मुजालिअत करनेवाला) अगर कहे के मैं अल्लाह तआला के सिवा किसी की इबादत नहीं करता, रहा ओलिया पगैरहुम् को पुकारना और उन की तरफ़ रुजूअ करना तो ये उन की इबादत तो नहीं !

आप उस से कहें के तुम जानते हो, अल्लाहतआलाने एब्लासे (जालिस) एबादत तुम पर इर्ज़ किया है ? बयान करो. ऋहिर बात है के वह अल्लाहतआला की एबादत और उस के एस पेह्लू से वाकिफ़ नहीं होगा. एस लिअे आप जुए उसे अल्लाहतआला का ये कौल पड कर समजायें : “अपने रब को गिडगिडा कर चुपके चुपके पुकारो क्युं के वह हट से बडनेवालों को पसंद नहीं करता.” (सुरह अअ्राफ़ आयत : ५५)

एस के बअए उस से पूछें के पुकारना एबादत है या नहीं ? वह ऋर कहेगा के हां. क्युंके दुआ और पुकारना एबादत है और अल्लाहतआला से डर कर उस से उम्मीद लगा कर दिन रात तुम उसे पुकारते भी हो, फिर उस के साथ ही किसी हाजत में नबी, वली वगैरह को भी पुकारा, तो क्या तुम अल्लाहतआला की एबादत में दूसरे को शरीक ठेहराया के नहीं ? वह ऋर कहेगा के हां !

कुर्बानी करना भी एबादत है

एस के बअए उस से कहें के अल्लाहतआला के एस इरमान (में है के) : “अपने मालिक के लिअे नमाज़ पडो और कुर्बानी करो.” (सूरह कोषर आयत : २)

ये जानने के बअए जब तुमने अल्लाहतआला की एताअत की और उस के लिअे कुर्बानी पेश की तो ये एबादत हुए या नहीं ? वह ऋर कहेगा के हां ये एबादत हुए. अब उस से पूछें के यही कुर्बानी जब तुमने किसी नबी, जिन्न या किसी भी मख्लूक के लिअे की तो उस एबादत में अल्लाहतआला के साथ गैर को शरीक ठेहराया के नहीं ? वह ऋर एस का एकरार करेगा और कहेगा हां !

साथ ही आप उस से ये भी पूछें के वह मुश्किन जिन के बारे में कुर्बान नाज़िल हुवा, क्या वह मलाएकह, सालिहाअ और लात (तीन जुतों में से अेक) वगैरह की परस्तिश करते थे ? वह ऋर कहेगा, हां. फिर आप उसे बतायें के उन की परस्तिश यही थी के वह उन्हें पुकारते थे, उन के लिअे जानवर ऋह करते थे और उन की तरफ़ पनाह लेते थे, वरना वह एस बात का एकरार करते थे के वह अल्लाहतआला के बंटे और उस के मातेहत (गुलाम) हैं और ये के अल्लाहतआला ही उमूरे काएनात का एन्तिज़ामकार (काएनात के कामो का एन्तिज़ाम करनेवाला) है लेकिन एस एकरार के बावजूए उन्होंने मलाएकह और सालिहीन के जाह व मर्तबह (उंचे दर्जेह) और शफ़ाअत के पेशेनज़र (सामने रज कर) उन्हें पुकारा और उन की तरफ़ पनाह ली.

शफ़ाअत बरहक़ है

मुअ्तरिअ अगर आप से ये कहे के तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत का इन्कार और उस से बेजारी (नाराज़गी) जाहिर करते हो ! तो आप उस से कहे के मैं शफ़ाअते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का न तो मुन्किर हूँ न उस से बेजार हो सकता हूँ. मेरा इमान है के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शाफ़िअ (शफ़ाअत करनेवाले) व मुशफ़्फ़िअ (जिन की शफ़ाअत कुबूल की गइ) हैं और आप की शफ़ाअत का उम्मीदवार भी हूँ लेकिन शफ़ाअत अल्लाहतआला के इज्तिवार में है, जैसा के अल्लाहतआला का इशार्ह है : “केह दो के शफ़ाअत तो सारी की सारी अल्लाह के इज्तिवार में हैं.”

(सूरह जुमर आयत : ४४)

और ये शफ़ाअत अल्लाहतआला की इजाज़त के बअद होगी, जैसा के इरमाया : “उस के हुक्म के बगैर कौन उस के पास शफ़ाअत कर सकता है.”

(सूरह बकरह आयत : २५५)

नीअ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी के बारे में उस पइत तक शफ़ाअत नहीं करेंगे जब तक अल्लाहतआला उस के बारे में शफ़ाअत की इजाज़त न दे दे, जैसा के (अल्लाहतआलाने) इरमाया : “वह इरिशते किसी की शफ़ाअत नहीं कर सकते मगर जिस के लिअे अल्लाह की मर्ज़ी हो.”

(सूरह अम्बिया आयत : २८)

और अल्लाहतआला सिई तोहीट को पसंद करता है, जैसा के इशार्ह है : “जे शफ़स इस्लाम के सिवा कोइ और दीन चाहे तो हरिअ उस से कुबूल न किया जायेगा.” (सूरह आलिइमरान आयत : ८५)

गोया (मअलूम हुवा के) शफ़ाअत की इजाज़त भी सिई अहले तोहीट के लिअे होगी.

शफ़ाअत कुबूल करना सिई अल्लाहतआला का हक़ है

जब सारी की सारी शफ़ाअत अल्लाहतआला के इज्तिवार में है और शफ़ाअत अल्लाहतआला की इजाज़त के बअद होगी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी किसी के बारे में उस पइत तक शफ़ाअत नहीं करेंगे जब तक उस के बारे में अल्लाहतआला शफ़ाअत की इजाज़त न दे दे, और

अल्लाहतआला सिई अहले तौहीद के लिअे शफ़ाअत की एंजाअत मर्हमत (अता) इरमाअेगा तो एंस की तस्सील से ये बात पाअेह हो गए के शफ़ाअत सारी की सारी अल्लाहतआला के एंजितयार में है लिहाअा में अल्लाहतआला से शफ़ाअत का तलबगार हूं और ये दुआ करता हूं के एंलाही ! मेरे सिल्सिले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत की एंजाअत मर्हमत इरमां !

मुअ्तरिअ अगर ये कहे के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत अता कर दी गए है और में उस अता की गए चीअ का आप से सपाल करता हूं.

आप उस से कहे के अल्लाहतआलाने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत अअर अता इरमाए है लेकिन एंस के साथ ही आप से बराहे रास्त (सीधा) शफ़ाअत का सपाल करने से मनअ ली इरमाया है. एंशाद है : “अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो.” (सूरह जिन्न आयत : १८)

जब तुम अल्लाहतआला से दुआ करते हो के वह अपने नबी को तुम्हारे बारे में शफ़ाअत करने की एंजाअत दे दे तो मअ्कूरह बाला आयत में ली अल्लाहतआला की एंताअत करो और उस के साथ किसी और को न पुकारो.

दूसरी बात ये है के नबीअे अइरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एंलापह दूसरों को ली शफ़ाअत का हक़ दिया गया है, युनांये सहीह अहादीष से षाबित है के मलाएकह, ओलिया और छोटे छोटे बरये ली शफ़ाअत करेंगे. सपाल ये है के क्या तुम ये केह सकते हो के अयुंके अल्लाहतआलाने उन्हें शफ़ाअत अता की है एंस लिअे में उन से शफ़ाअत तलब कइंगा ? अगर केहते हो के हां, तो यही तो सालिहीन की एंबादत करना है, जिस का अल्लाहतआलाने कुअनि मअ्द के अंदर तअ्किरह इरमाया है और अगर केहते हो नहीं तो तुम्हारा ये कौल ली अपने आप बातिल हो जाता है के अल्लाहतआलाने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत अता की है, एंस लिअे में एंस अता की गए चीअ का आप से सपाल करता हूं.

सालिहीन की पनाह दूंढना शिई है

मुअ्तरिअ अगर ये कहे के में हाशा व कला (हर्गिअ हर्गिअ नहीं) अल्लाहतआला के साथ किसी ली चीअ को शरीक नहीं ठेहराता लेकिन ये

समजता हूं के सालिहीन की पनाह दूँना शिर्क नहीं है.

आप उस से कहें के तुम इस बात का इकरार करते हो के अल्लाह तआलाने शिर्क को जिना से ली बढ कर हराम करार दिया है और इस का इकरार करते हो के अल्लाहतआला मुश्रिक को कभी मुआइ नहीं करेगा तो शिर्क आभिर वह कौन सा जुर्म है जो इस दर्जेह हराम है और जिसे अल्लाहतआला कभी मुआइ नहीं कर सकता ?

इस सवाल का यकीनन् उस के पास जवाब नहीं होगा, लिहाजा आप उस से कहें के तुम शिर्क से अपने आप को कैसे मुबर्रा (दूर, पाक) समजते हो, जब तुम भुट शिर्क का मतलब ली नहीं जानते. ये क्युं कर हो सकता है के अल्लाहतआला कोय चीज हराम करार दे और ये कहे के में इसे कभी मुआइ नहीं कर सकता और तुम उस चीज के बारे में न जानो और न दरियाइत करो, क्या ये समजते हो के अल्लाहतआलाने बस हराम करार दे कर छोड दिया और उस को बयान नहीं इरमाया ?

लेकिन अगर वह ये कहे के “शिर्क” बुतों की इबादत का नाम है और हम बुतों की इबादत तो नहीं करते, तो आप उस से पूछें क्या तुम ये समजते हो के मुश्रिकीन पूजा की जानेवाली लकडीयों और पथथरों को जालिक व रात्रिक और मुदब्बिर मानते थे ? अगर ऐसा समजते हो तो ये गलत है, कुआने करीम इस की तर्दीह (रद) करता है.

और अगर वह कहे के “शिर्क” ये हे के इन्सान लकडीयों, पथथरों, कबरों पर बनी हुइ इमारतें वगैरह का रुज करे, उन्हें पुकारे, उन के लिअे जानवर खबह करे और ये अकीदह रब्जे के ये हमें अल्लाहतआला के करीब कर देते हैं अपनी बरकत से हमारी परेशानियां दूर कर देते हैं और हमारी मुरादें (तमन्नाअें) पूरी कर देते हैं तो आप उस के जवाब की ताइद (तरइदारी) करें और ये बता दें के पथथरों और मजारों पर जाकर जो काम तुम लोग अन्जाम देते हो वह ली यही है. इस तरह गोया उसने इस बात का इकरार कर लिया के उस का इइल् (अमल) ही बुतो की इबादत है.

उस से आप ये ली पूछें के तुमने जो ये कहा के “शिर्क” बुतों की इबादत का नाम है इस से तुम्हारी मुराद क्या है ? अगर तुम ये समजते हो के “शिर्क” बुतों के साथ भास है, बुजुर्गों को पुकारना और उन पर लरोसा करना शिर्क में दाभिल नहीं तो ये गलत है. कुआन मजुदने हर उस शअ्स को काइर

करार दिया है जो इरिशतों या इसा अलैहिस्सलाम या बुजुर्गों से लो लगाये या उन के साथ ऐसा तअल्लुक रब्जे.

शिर्क क्या है ?

अब ये शफ्स लाजिमी (ज़रूरी) तौर पर इस बात का इकरार करेगा के अल्लाहतआला की इबादत में किसी भी नेक शफ्स को शामिल करना ही शिर्क है जिस का कुअनि करीम में तज़्किरह है.

इस मस्अले का राज़ ये है के जब कोइ शफ्स ये कहे के में अल्लाह तआला के साथ शिर्क नहीं करता तो आप उस से कहे के शिर्क की पज़ाहत करो, अगर कहे के में अल्लाहतआला के सिवा किसी की इबादत नहीं करता, तो कहे के अेक अल्लाहतआला की इबादत का क्या मतलब है, बयान करो ?

उसने अगर कुअनि मज़्द के मुताबिक अेक अल्लाहतआला की इबादत का मतलब बयान कर दिया तो यही मतलूब व मकसूद (मतलब, मकसद) है, लेकिन अगर कहे के में नहीं जानता तो उस से पूछें के तुम उस चीज़ का दअ्पा कैसे करते हो जिस का मतलब ही नहीं जानते ? और अगर उसने गलत मतलब बयान किया तो शिर्क बिल्लाह (अल्लाह के साथ शिर्क) और इबादते अस्नाम (बुतों) के सिल्सिले में वारिद (आइ हुइ) कुअनी आयतें पड कर सुनाअें और ये बताअें के ये बिअेनही (हूबहू) वही चीज़ें हैं जो हमारे ज़माने में लोग कर रहे हैं और अेक अल्लाहतआला की इबादत ही वह “जुर्म” है जिस की लोग हमें सज़ा दे रहे हैं और हमारे बिलाइ अपने साबिकह (पूराने ज़माने के) मुश्रिक भाइयों की तरह चीजते थिल्लाते हैं. (जैसा के इरमाने इलाही है) के : “क्या उसने सब मअ्बूदों को अेक मअ्बूद कर दिया, ये तो बडी अनोभी बात है.”

(सूरह सोद आयत : 5)

डुबूबियत का इकरार और उलूहियत का इन्कार

ये मअ्लूम हो जाने के बअ्द के हमारे दौर के मुश्रिकीन जिसे “अेअ्तिकाद” केहते हैं ये वही शिर्क है जिस के बारेमे कुअनि नाज़िल हुवा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने लोगों से जिस पर किताल किया, ये भी जानते यलें के पेहले लोगों का शिर्क हमारे दौर के लोगों के शिर्क से दौरे वजूद से कम्तर (इस दौर से कम) था.

(१) पेहले दौर के मुश्कि सिई राहत व आराम की हालत में मलाईकह, ओलिया या जुतो को पुकारते और उन्हें अल्लाहतआला का शरीक ठेहराते थे, सप्ती और परेशानी के वस्तु सब को छोड कर सिई अल्लाहतआला को पुकारते थे, जैसा के मन्दरजह जैल (दर्ज हुं) आयतों में बयान किया गया :

“जब समन्दर में तुम आइत में गिरस्तार होते हो तो अल्लाह के सिवा जिन जिन को तुम पुकारा करते थे सब भूल जाते हो फिर जब तुम को भुशकी में बया लाता है तो अल्लाह से फिर बेहते हो, और आदमी बडा नाशुक्रा है.”
(सूरह बनी इस्राईल आयत : ५७)

“(अे पैगम्बर) धन काइरों से कहे भला बतलाओ तो सही अगर तुम पर अल्लाह का अजाब आ जाये या तुम पर कियामत आन जडी हो तो क्या उस वस्तु अल्लाह के सिवा किसी ओर को पुकारोगे अगर तुम सच्ये हो ? बल्के भास अल्लाह ही को पुकारोगे, फिर अगर वह याहेगा तो उस मुसीबत को जिस के लिअे पुकारते हो दूर कर देगा और जिन को तुमने उस का शरीक बनाया था उन सब को भूल जाओगे.” (सूरह अन्आम आयत : ४०, ४१)

“जब आदमी को कोई तस्लीइ पहुंचती है तो दिल से अपने मालिक की तरफ रुजूअ कर के उस को पुकारता है, फिर जब वह अपनी तरफ से उस को कोई निअ्मत देता है तो उस को भूल जाता है जिस को धस से पेहले पुकारता था और दूसरों को अल्लाह का शरीक ठेहराता है ताके वह उस की राह से गुमराह कर दे.”

(सूरह जुमर आयत : ८)

“यअ्नी जब साईबानों (छतों) की तरह उन को मौज ढांक लेती है तो उस वस्तु सच्ये दिल से अल्लाह ही की बंदगी कर के उसी को पुकारते हैं.”

(सूरह लुक्मान आयत : ३२)

जे शप्स ये मस्अलह अरछी तरह समज ले के जिन मुश्किीन से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने किताल किया वह सिई राहत व आराम की हालत में अल्लाहतआला के साथ दूसरों को पुकारते थे लेकिन सप्ती व परेशानी के वस्तु वह सब को छोड कर सिई अल्लाह वहदहु को पुकारते और अपने सादात (सरदारों, जुजुगों) को भूल जाते थे तो ये समजने के बअद उस के लिअे पेहले दौर के मुश्कि और हमारे जमाने के मुश्किीन के शिक के दर्मियान ईई पाजेह हो जायेगा, लेकिन अइसोस ! कहा हैं वह दिल जे धस मस्अलेह को अरछी तरह समज सकें.

(२) हमारे झमाने के मुश्किनीन के मुकाबले में पेहले झमाने के मुश्किनीन के शिर्क के कम्तर होने की दूसरी वजह ये है के पेहले लोग अल्लाहतआला के साथ उन्ही लोगों को पुकारते थे जो अल्लाहतआला के मुकर्रिब बंटे होते थे जैसे अब्बिया, ओलिया या मलायकह वगैरह. या फिर पथरों और दरख्तों को पुकारते थे जो अल्लाहतआला के इस्मांभर्दार हैं, नाइर्मान नहीं.

लेकिन हमारे झमाने के मुश्किनीन अल्लाहतआला के साथ जिन जिन को पुकारते हैं वह धन्तेहाय इंसिक व इज्जिर (गुनहगार, बटकार) और बटतरीन किस्म के लोग होते हैं. कमाल की बात ये है के मुश्किनीन जुद उन के इंसिक व इज्जिर होने, जिनाकारी, योरी चकारी में मुलव्वष (कसूरवार) होने और बेनमाजी होने की दास्तानें (किस्से) बयान करते रहेते हैं.

आहिर बात है के जो शप्स किसी नेक व सालिह शप्स के बारे में कोय अकीदह रब्जे या लकडी और पथर जैसी चीजों के बारे में अकीदह रब्जे जो अल्लाहतआला के नाइर्मान नहीं हैं, ऐसे शप्स का शिर्क उस आदमी के शिर्क से कहीं हल्का होगा जो वह अकीदह किसी इंसिक व इज्जिर शप्स के बारे में रब्जे और जुद उस के इस्क व कुजूर (गुनाह, बटकारी) की गवाही ली टे.

जब ये बात धाबित हो गय के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिन लोगों से किताल किया वह हमारे झमाने के मुश्किनीन से क्रियादह अक्लमंत और उन से कम्तर मुश्कि थे तो आप ये ली जानते चलें के उन को अेक शुबह (वहम) है जिसे वह हमारे मज्जूरह बाला दलायल के जिलाइ पेश करते हैं और ये अेक बडा शुबह है, लिहाजा गौर से इस का जवाब सुनें (पडे).

कुइर क्या है ?

वह केहते हैं के जिन मुश्किनीन के बारे में कुर्आन नाजिल हुवा वह “ला इलाह इल्लल्लाह” की गवाही नहीं देते थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तक्ज़ीब करते (जुटलाते) थे, आजिरत का इन्कार करते थे, कुर्आन को जुटलाते और उसे जादू केहते थे, लेकिन हम “ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्सूलुल्लाह” की गवाही देते हैं. कुर्आन की तस्दीक करते (सच्चा मानते) हैं. आजिरत पर इमान रभते हैं. नमाज पडते हैं. रोज़ह रभते हैं. फिर हमें उन मुश्किनीन के बराबर कयुं करार देते हो ?

इस का जवाब ये है के जम्हूर उलमा का इस बात पर इत्तइाक (अइ्षर

(उलमाअ की यही राय) है के जो शप्स तमाम बातों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तस्दीक करे और सिई अक बात में आप को जुटला दे, वह काफिर है. एसी तरह वह शप्स जो कुर्आन के बअज़ हिस्से पर एमान लाअे और बअज़ का एन्कार करे, वह भी काफिर है, जैसे कोए शप्स तोहीट का एकरार करे और नमाज़ का एन्कार. या तोहीट और नमाज़ दोनों का एकरार करे और ञकात का एन्कार या एन सब इराएज़ का एकरार करे और हज़्ज का एन्कार, या मज़्कूरह पांयों इराएज़ का एकरार करे मगर योमे आभिरत (के टिन) का एन्कार. तो ऐसा शप्स बिल्एजमाअ (सब की अक राय से) काफिर है और उस की जान व माल मुबाह (हलाल, जाएज़) है. अल्लाहतआला का एर्शाट है : “जो लोग अल्लाह और उस के पैगम्बर को नहीं मानते और अल्लाह और उस के पैगम्बरों में जुदाए डालना चाहते हैं और केहते हैं के हम बअज़ पैगम्बरों को मानेंगे और बअज़ को नहीं मानेंगे और कुइर व एमान के दर्भियान अक रास्तह बनाना चाहते हैं, यही लोग तो पक्के काफिर हैं.” (सूरह निसाअ आयत : १५०, १५१)

अल्लाहतआलाने जब पूरी सराहत (पञाहत) के साथ ये बयान इरमा दिया के जो शप्स बअज़ हिस्सों पर एमान लाअे और बअज़ का एन्कार करे वह पक्का काफिर है तो मुशिरकीन का पेश कर्दह मज़्कूरह शुबह भी जल्म हो जाता है.

मज़्कूरह शुबह के जवाब में मुअ्तरिज़ से ये भी कहा जाअेगा के जब तुम एस बात का एकरार करते हो के जो शप्स तमाम उमूर (सब काम) में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तस्दीक करे और सिई नमाज़ का एन्कार कर दे तो वह बिल्एजमा काफिर है और उस की जान व माल मुबाह है या एसी तरह जो शप्स तमाम इराएज़ का एकरार करे और सिई योमे आभिरत का एन्कार कर दे या तमाम चीज़ों का एकरार करे मगर रमज़ान के रोज़े की इर्ज़ियत का एन्कार कर दे, वह बिल्एजमा काफिर है. किसी भी मज़्हब का एस में एज्जिलाइ नहीं और ये बात सब जानते हैं के “तोहीट” रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लाया हुवा सब से अहम इरीज़ह है और उस की हैधियत नमाज़, ञकात, रोज़ह और हज़्ज से भी बड कर है, तो ये कैसे हो सकता है के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाए हुए शरीअत पर मुकम्मल अमल के बावजूद कोए शप्स अगर अक बात का भी एन्कार कर दे तो वह काफिर हो जाअे और कोए तोहीट का जो तमाम अम्बिया का दीन है, एन्कार कर के भी मुसलमान बना बैठा रहे ?

मुअ्तरिऊ से जवाब में ये ली कहा जायेगा के सहाबह अे किराम रटियल्लाहु अन्हुमने बनू हनीइह से किताल किया, हालांके बनू हनीइह के लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ पर एमान लाये थे और “ला एलाह एल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह” का एकरार करते थे. अऊान ऐते थे और नमाऊ ली पडते थे.

एस पर अगर वह ये कहे के सहाबह अे किराम रटियल्लाहु अन्हुमने बनू हनीइह से एस लिअे किताल किया के वह मुसैलमह को नबी केहने लगे थे, एस पर आप जवाब ऐं के हम ली तो यही केहते हैं. बनू हनीइहने जब अेक शप्स को नबुप्पत के एर्रैह तक पहुंचा दिया तो उन का शहादतें (यअ्नी ला एलाह एल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) की गवाही देना, नमाऊ पडना और रोजह रफना कुछ काम न आ सका और काफिर और मुजाहुदम (कत्ल किअे जाने को हलाल) करार पाअे, तो जो शप्स “शमसान” या “यूसुइ” या किसी सहाबी को उलूहियत के एर्रैह तक पहुंचा ऐ, वह कयुं कर मुसलमान बाकी रहेगा ?

मुअ्तरिऊ को ये जवाब ली दिया जायेगा के हऊरत अली रटियल्लाहु अन्हुने जिन लोगों को आग से जलाया था वह सब के सब एस्लाम के एअ्पेदार और भुए हऊरत अली रटियल्लाहु अन्हु के साथीयों में से थे और सहाबह अे किराम रटियल्लाहु अन्हुम से उनहोंने एल्म सीजा था. लेकिन जब उनहोंने हऊरत अली रटियल्लाहु अन्हु के बारे में उलूहियत का अकीएह ँाहिर किया, जैसा अकीएह लोग “यूसुइ” और “शमसान” के बारे में रफते हैं तो तमाम सहाबह अे किरामने मुत्तकिह तौर पर (अेक राय से) उनहें काफिर करार ऐ दिया और उन को कत्ल किया. क्या आप ये केह सकते हैं के सहाबह अे किराम रटियल्लाहु अन्हुम मुसलमानों को काफिर करार ऐंगे ? या ये के हऊरत अली रटियल्लाहु अन्हु के बारे में ऐसा अकीएह रफना तो कुइर है लेकिन “ताज”, “यूसुइ” और “शमसान” वगैरह के बारे में ऐसा अकीएह रफने में कोए हरज (नुइसान) की बात नहीं ? ★ (पऊाहत : ताज, यूसुइ और शमसान ये उन लोगों के नाम हैं जिन को अल्लाहतआला का शरीक ठेहराया जाता था और उन की एबाएत की जाती थी).

शरीअत की मुजासिहत का नतीजह

जवाबन् ये ली कहा जायेगा के बनू अबीए अल् कद्दाह जो अह्ते अब्बासियह में मिस्र और मग्रिब पर हुकूमत कर रहे थे, वह सब “ला एलाह

काफ़िर हो गये.” (सूरह तौबह आयात : ५५, ५६)

इस आयत में अल्लाहतआलाने जिन लोगों का ठिक किया है और जिन के बारे में ये सराहत इरमाह है के वह इमान के बन्दूक काफ़िर हो गये. वह गळपा अे तबूक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे और उन की ञबान से अेक बात निकल गइ थी जिस के बारे में वह जुद इकरार करते थे के हमने उसे बतारे मळाक कहा था.

आप मुश्किन के इस शुबहे पर फिर गौर करें, जे ये केहते हैं के तुम उन मुसलमानों को कैसे काफ़िर गर्दन्ते (मानते) हो जे “ला इलाह इल्लल्लाह” की गवाही देते हैं, नमाळ पडते हैं और रोजह भी रभते हैं ? और इस के बन्दूक इस शुबह का मळकूरह जवाब ध्यान से पडें, ये बडा ही मुझीद और गिरांकदर (इअदिमंत और कीमती) जवाब है.

मळकूरह जवाब की अेक दलील वह पाकिया भी है जे अल्लाह तआलाने बनी इस्राइल के सिलसिले में बयान किया है के उन्होंने इस्लाम लाने और इल्म व तकवा के बावजूद मूसा अलैहिस्सलाम से ये मुतालबा किया के : “अे मूसा ! जैसे इन लोगों के पास मब्बूद हैं अैसा ही अेक मब्बूद हमारे लिअे भी बना दो.” (सूरह अअ्राइ आयात : १३८)

नीळ बम्बू सहाबह अे किराम रदियल्लाहु अन्हुमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा के हमारे लिअे भी अेक “ञाते अन्पात” बना दीजिअे. इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने कसम जा कर इरमाया के ये केहना बिल्कुल ही पेसा है जैसा के बनी इस्राइलने हळरत मूसा अलैहिस्सलाम से कहा था के हमारे लिअे भी अेक मब्बूद बना दो.

(तिर्मिळी, अहमद)

लेकिन इस मोके पर मुश्किन अेक शुबह और पेश करते हैं, वह ये के बनी इस्राइलने हळरत मूसा अलैहिस्सलाम से जिस बात का मुतालबा किया, उस पर वह काफ़िर नहीं करार दिअे गअे. इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने भी अपने उन अस्थाब को काफ़िर नहीं गर्दाना (माना), जिन्होंने आप से “ञाते अन्पात” बनाने को कहा था.

इस शुबहे का जवाब ये है के बनी इस्राइलने हळरत मूसा अलैहिस्सलाम से मब्बूद बनाने का सिई मुतालबा किया था. मब्बूद बनाया नहीं था. इसी तरह बम्बू सहाबह रदियल्लाहु अन्हुमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम से “जाते अन्पात” बनाने की सिर्फ़ दरजास्त की थी और इस बात पर किसी का धितिलाइ नहीं के बनी धर्राधलने जिस चीज का मुतालबह किया था अगर वह कर गुज़रे होते या सहाबह अे किराम रदियल्लाहु अन्हुमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात न मानी होती और मनअ करने के बावजूद “जाते अन्पात” बना लिया होता तो वह काफ़िर करार पाते.

इहमे दीन ञर्री है

मज़्ज़ूरह पाकिया अेक दूसरे पेहलू से इस जानिब (तरइ) धशारा करता है के अेक मुसलमान बल्ले पडा लिफ्फा शफ्स ली गैरशुठीरी तौर पर शिर्क में मुबतला हो (अंजाने में इंस) सकता है. लिहाज़ा धल्म हासिल करने के साथ साथ तहक्कुज़ (हइज़त) ली ञर्री है और ये जानना ली लाज़िम है के अपामुण्नास (आम लोगों) का ये केहना के “हमने तोहीट को समज लिया है” शैतानी धोके और बडी नादानी की बात है.

मज़्ज़ूरह पाकिया से पता चलता है के अेक मुसलमान मुजतहिद (कुर्आन व हदीष से मस्थले निकालनेवाला आलिम) अगर लाधल्मी में कोध कुइरियह बात केह दे और तम्बीह (नसीहत) के बअद इौरन उस से तौबह करले तो वह काफ़िर नहीं होगा.

इस पाकिया से अेक अहम मस्थला और ली सामने आता है, वह ये के अैसा शफ्स अगर येह इाक़िर नहीं होता लेकिन बडे ही सफ्त अल्इज़ में उस की तम्बीह होनी चाहिअे, जैसा के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने अपने अरहाब को इरमाध थी.

मुश्रिकीन को अेक ओर शुबह है, वह केहते हैं के हज़रत उसामह बिन ञैद रदियल्लाहु अन्हु ने जब “ला धलाह धल्लल्लाह” केहने वाले शफ्स को कल कर दिया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने उस पर नाराज़ी (नाराज़गी) ञाहिर की और इरमाया : “क्या ला धलाह धल्लल्लाह पडने के बअद ली तुमने उसे कल कर दिया ?” (सहीह बुजारी, सहीह मुस्लिम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीष है : “मुजे इस बात का हुक्म दिया गया है के (में) लोगों से उस वस्त तक किताल करता रहूं जब तक

के वह ला एलाह एल्लेलाह का एकरार न कर लें.” (सहीह बुजारी, सहीह मुस्लिम)

ये नादान मुश्रिक एन अहादीथ का मतलब ये निकालते हैं के “ला एलाह एल्लेलाह” का एकरार कर लेने के बअद आदमी जो भी चाहे करे, उसे काफिर केह सकते हैं न कत्ल कर सकते हैं.

एन नादानों को मअलूम होना चाहिये के यहूद भी ला एलाह एल्लेलाह पडते थे, लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने उन से किताल किया और उन्हें कैदी बनाया. बनू हनीफ़ा के लोग भी ला एलाह एल्लेलाह मुहम्मदुर्सूलुल्लाह की शहादत देते थे, नमाज़ पडते थे और एस्लाम का दअ्वा भी करते थे, लेकिन उस के बावजूद सहाबह अे किराम रदियल्लाहु अन्हुमने उन से किताल किया, एसी तरह वह लोग भी तोहीद का एकरार करते थे जिन्हें हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हुने आग से जलाया.

ये जाहिल एस बात को तो मानते हैं के आभिरत का मुन्किर या एस्लाम के किसी रुक्न का मुन्किर अगर येह ला एलाह एल्लेलाह का एकरार करता हो, काफिर और मुबाहुदम है. सवाल ये है के एस्लाम के किसी रुक्न का एन्कार करनेवाले को जब कलिमह “ला एलाह एल्लेलाह” का एकरार कुफ़ से नहीं बचा सकता तो “तोहीद” जो तमाम अम्बिया के दीन की जड है, (उस) का एन्कार करनेवाले को कयुं कर बचा सकता है?

हज़रत उसामह रदियल्लाहु अन्हु की जिस हदीथ से मुश्रिकीन दलील पकडते हैं, उस का जवाब ये है के हज़रत उसामह रदियल्लाहु अन्हुने अेक शअ्स को उस के एस्लाम का दअ्वा करने के बअद भी ये समज कर कत्ल कर दिया के उसने अपनी जान व माल को बचाने के लिअे कलिमह पड लिया है. आदमी जब अपने एस्लाम का एख़्तार कर दे तो उस से हाथ रोक लेना ञ़रूरी है. यहां तक के उस के जिलाफ़ कोय बात धाबित हो जाअे. एस सिल्सिले में अल्लाहतआलाने ये आयत नाज़िल इरमाए : “अे एमानवालो ! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद में) निकलो तो तह्कीक कर लिया करो.”

(सूरह निसाअ आयत : ८४)

ये आयत एस बात पर दलालत करती है के जो शअ्स अपने एस्लाम का एख़्तार कर दे उस से हाथ रोक लेना और उस के बारे में तह्कीक करना ञ़रूरी है. तह्कीक के बअद अगर उस से कोय ऐसी बात धाबित हो जो एस्लाम के जिलाफ़ है तो उसे कत्ल कर दिया जाअेगा. एस आयत का हर्गिज़ ये मतलब नहीं के

ઇસ્લામ ઝાહિર કરને યા કલિમહ એ શહાદત કા ઇકરાર કરને કે બઅદ આદમી કો કત્લ નહીં કિયા જાએગા. અગર યહી મતલબ હોતા તો ઇસ આયત મેં તહકીક કરને કા જો હુક્મ દિયા ગયા હૈ ઉસ કા કોઇ મઅની હી નહીં રેહ જાતા.

ઇસી તરહ ઇસ મોઝૂ કી ઈગર અહાદીષ કા મતલબ ભી વહી હૈ જો ઉપર મઝ્કૂર હુવા હૈ, યઅની જો શખ્સ ઇસ્લામ યા તોહીદ કા ઇઝ્હાર કર ટે ઉસ સે હાથ રોક લિયા જાએગા ઓર તહકીક કે બઅદ ઉસ કે અન્દર ઇસ્લામ કે ખિલાફ કોઇ બાત ષાબિત હો તો કત્લ કર દિયા જાએગા. ઇસ કી દલીલ યે હૈ કે જિસ રસૂલ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વ સલ્લમને હઝરત ઉસામહ રદિયલ્લાહુ અન્હુ સે કહા થા કે કયા “લા ઇલાહ ઇલ્લલ્લાહ” કેહને કે બઅદ ભી તુમને ઉસે કત્લ કર દિયા ? (સહીહ બુખારી, સહીહ મુસ્લિમ) ઓર જિસ રસૂલ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વ સલ્લમ કી યે હદીષ હૈ કે મુજે હુક્મ દિયા ગયા હૈ કે લોગોં સે ઉસ વક્ત તક કિતાલ કરતા રહૂં જબ તક કે વહ “લા ઇલાહ ઇલ્લલ્લાહ” કા ઇકરાર ન કર લેં. (સહીહ બુખારી વ સહીહ મુસ્લિમ) ઉસી રસૂલ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વ સલ્લમને ખવારિજ કે સિલ્સિલે મેં યે હુક્મ ઇર્શાદ ફરમાયા હૈ : “ઉન્હેં જહાં કહીં ભી પાઓ કત્લ કરો, અગર મેંને ઉન કો પા લિયા તો કોમે આદ કી તરહ ઉન્હેં કત્લ કરૂંગા.”

(સહીહ બુખારી, સહીહ મુસ્લિમ)

સભી જાનતે હેં કે ખવારિજ બહુત ઝિયાદહ ઇબાદત ગુઝાર ઓર અલ્લાહતઆલા કી તક્બીર વ તહલીલ કરનેવાલે થે. હત્તા કે બઅઝ સહાબહ રદિયલ્લાહુ અન્હુમ ઉન કે સામને અપની નમાઝોં કો હકીર સમજતે થે. ઉન ખવારિજને સહાબહ એ કિરામ રદિયલ્લાહુ અન્હુમ સે ઇલ્મ ભી હાસિલ કિયા થા લેકિન જબ ઉન કી જાનિબ સે શરીઅત કી ખિલાફવર્ઝી સામને આઇ તો “લા ઇલાહ ઇલ્લલ્લાહ” કા ઇકરાર, કષરતે ઇબાદત ઓર ઇસ્લામ કા દઅવા કુછ ભી તો ઉન કે કામ ન આ સકા.

ગુઝિશ્તા સફ્હાત મેં રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વ સલ્લમ કે ચહૂદ સે કિતાલ કરને કા વાકિઆ નીઝ સહાબહ એ કિરામ રદિયલ્લાહુ અન્હુમ કે બનૂ હનીફા સે કિતાલ કરને કી મિષાલ ગુઝર ચુકી હૈ. યે વાકિઆત ભી ઉપર (આગે) બયાન કિએ ગએ મસ્અલે કી તાઈદ (હિમાયત) કરતે હેં.

जबर डी तह्डीक ञरूरी है

साथ ही उस वाकिअह पर भी गौर करते चलें के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब इस बात की इत्तिलाअ (जबर) मिली के बनू मुस्तलक के लोगोंने ञकात देने से इन्कार कर दिया है तो आपने उन से जंग करने का इरादा इरमाया.

इस पर ये आयत नाज़िल हुइ : “अे मोमिनो ! कोइ इासिक शअ्स अगर कोइ जबर तुम्हारे पास लाअे तो उस डी तह्डीक कर लिया करो. अैसा न हो (के), जाने बूजे बगैर किसी डौम पर चड डोडो, इर अपने डिअे पर पछताओ.” (सूरह हुजुरात आयत : 5)

बअ्द में ञाहिर हुवा के बनू मुस्तलक के मुतअल्लिक इत्तिलाअ देनेवाला शअ्स बूटा था. बहरहाल ये तमाम वाकिआत इस बात डी जुल्ली दलील हैं के मुशिरकीनने जिन अहादीथ से दलील पकडी है उस का सहीह मतलब वही है जो हमने बयान किया.

इस्तिगाथह का मइहूम (मतलब)

मुशिरकीन को अेक शुबह ये है के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम डी हदीथ है, कियामत के दिन लोग हजरत आदम अलैहिस्सलाम के पास इस्तिगाथह (मदद) के लिअे जाअेंगे, इर हजरत नूह अलैहिस्सलाम के पास, इर हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास, इर हजरत मूसा अलैहिस्सलाम के पास, इर हजरत इसा अलैहिस्सलाम के पास इस्तिगाथह के लिअे जाअेंगे और सब के सब मअ्ज़रत (उजर) पेश कर देंगे. यहां तक के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास मुआमला लेकर पहुंचेंगे. मुशिरकीन केहते हैं के गोया (इस से मअ्लूम हुवा के) गैरुल्लाह से इस्तिगाथह करना शिक नही.

इस का जवाब ये है के मअ्लूक से उस काम में इस्तिगाथह के मुन्डिर नही जो उस के बस में हो, जैसा के हजरत मूसा अलैहिस्सलाम के वाकिआ में अल्लाहतआलाने इरमाया : “जो मूसा का हम डौम था उसने उस शअ्स के मुकाबले में जो मूसा के दुश्मन गिरोह में था, मूसा से मदद चाही.”

(सूरह कसस आयत : १५)

या जिस तरह इन्सान जंग वगैरह में अपने साथियों से उन उमूर में

ઇસ્તિગાથહ કરતા ઓર મદદ યાહતા હૈ જિન પર ઇન્સાન કાદિર હોતા હૈ, હમ તો ઉસ ઇસ્તિગાથહ કા ઇન્કાર કરતે હૈ જો બુઝુર્ગો કી કબરોં પર જાકર ઇબાદત કી શક્લ મેં કિયા જાતા હૈ યા ગાઇબાના તોર પર ઉન સે ઉન ચીઝોં કા સવાલ કિયા જાતા હૈ જો અલ્લાહતઆલા કે સિવા કિસી કે ઇખ્તિયાર મેં નહીં.

ઇસ તક્સીલ કે બઅદ મઝ્ફૂરહ હદીથ કી તરફ આએં જિસે મુશરિકીન બતોરે દલીલ પેશ કરતે હૈ. ઇસ હદીથ સે અમ્બિયા સે ઇસ્તિગાથહ કી તક્સીલ યે હૈ કે કિયામત કે દિન લોગ અમ્બિયા અલૈહિમુસ્સલામ કે પાસ આ કર યે દર્ખાસ્ત કરેંગે કે વહ અલ્લાહતઆલા સે યે દુઆ કરેં કે જલ્દ હિસાબ વ કિતાબ શુરૂઅ હો, તાકે જન્નતી હઝરાત મૈદાને હશર કી સખ્તિયોં સે નજાત પાએં.

ઝાહિર બાત હૈ કે ઇસ કિસ્મ કા ઇસ્તિગાથહ દુન્યા મેં ભી જાઇઝ હૈ ઓર આખિરત મેં ભી, કે આપ કિસી નેક ઓર ઝિન્દહ શખ્સ કે પાસ જાએં જો આપ કે પાસ બૈઠ કર આપ કી બાતેં સુને ઓર ઉસ સે યે દર્ખાસ્ત કરેં કે મેરે લિએ અલ્લાહતઆલા સે દુઆ કર દીજિએ. જૈસા કે સહાબહ એ કિરામ રદિયલ્લાહુ અન્હુમ રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વ સલ્લમ કી ઝિન્દગી મેં આપ કે પાસ આતે ઓર દુઆ કી દર્ખાસ્ત કરતે યે લેકિન આપ કી વફાત કે બઅદ હાશા વ કલ્લા કભી એસા નહીં હુવા કે સહાબહ એ કિરામ રદિયલ્લાહુ અન્હુમને આપ કી કબર કે પાસ આકર આપ સે દુઆ કી દર્ખાસ્ત કી હો બલ્કે સલફે સાલિહીન રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વ સલ્લમ કી કબર કે પાસ અલ્લાહતઆલા સે દુઆ કરને સે ભી મનઅ ફરમાતે યે, યેહ જાએકે ખુદ આપ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વ સલ્લમ સે દુઆ કી દર્ખાસ્ત કી જાએ.

મુશરિકીન કા એક શુબહ હઝરત ઇબ્રાહીમ અલૈહિસ્સલામ કા વાકિઆ ભી હૈ જબ હઝરત ઇબ્રાહીમ અલૈહિસ્સલામ કો આગ મેં ડાલા જાને લગા તો હઝરત જિબ્રઇલ અલૈહિસ્સલામ હાઝિર હુએ ઓર યે પેશકશ કી કે અગર કોઇ ઝરૂરત હો તો બતાએં ? હઝરત ઇબ્રાહીમ અલૈહિસ્સલામને જવાબ દિયા કે આપ સે તો મુજે કોઇ ઝરૂરત નહીં હૈ. ઇસ વાકિએ કો લેકર મુશરિકીન યે કેહ્તે હૈ કે હઝરત જિબ્રઇલ અલૈહિસ્સલામ સે ઇસ્તિગાથહ (મદદ યાહના) શર્ક હોતા તો ખુદ જિબ્રઇલ અલૈહિસ્સલામને હઝરત ઇબ્રાહીમ અલૈહિસ્સલામ સે યે પેશકશ ન કી હોતી.

યે શુબહ દરહકીકત પેહલે શુબહે જૈસા હૈ ઓર ઇસ કા જવાબ ભી વહી હૈ કે હઝરત જિબ્રઇલ અલૈહિસ્સલામને ઉસી ચીઝ કી પેશકશ હઝરત ઇબ્રાહીમ

अलैहिस्सलाम से की थी जिस पर वह काटिर थे. हजरत जिब्रैल अलैहिस्सलाम को अल्लाहतआलाने “सप्त कूप्तीवाला” (सूरह नजम आयत : ५) कहा है. इस लिये अल्लाहतआला अगर हजरत जिब्रैल अलैहिस्सलाम को इस बात की एजाजत दे देता के वह हजरत एब्राहीम अलैहिस्सलाम की आग और उस के ईर्त गिर्त जो जमीन और पहाड थे उन सब को उठा कर मशिक या मग्गिब में डेंक दें या हजरत एब्राहीम अलैहिस्सलाम को किसी दूर मकाम पर छोड आएं या उठा कर आस्मान पर पहुंचा दें तो यकीनन वह ये सब कुछ कर सकते थे. जैसे कोय मालदार शप्स किसी जरतमंड को देण कर कर्क देने की पेशकश करे या यूँही कुछ देना याहे जिस से वह अपनी जरत पूरी कर सके और ये जरतमंड शप्स लेने से एन्कार कर दे और सभर करने को ही तर्जुह दे, यहां तक के अल्लाहतआला जुड उस की रोळी का एन्तिजाम कर दे जिस में किसी और का कोय एहसान शामिल न हो.

तौहीद की अमली ततबीक (अमल करना)

इस रिआले के जातमे पर हम अक एन्तिहाय अहम मस्अले का ठिक कर देना चाहते हैं. साबिका गुस्तगू के दौरान इस मस्अले की तरफ एशारा आ चुका है लेकिन अयुंके ये मस्अला एन्तिहाय नाजुक है और लोग बकधरत इस में गल्ती कर बैठते हैं इस लिये अलायदा तौर पर (अलग से) इस का बयान कर देना जरूरी समजते हैं.

इस बात पर सब का एत्तझाक है के “तौहीद” का हिल, जमान और अमल तीनों से बयकपस्त (अक साथ) तअल्लुक होना जरूरी है. एन में से अगर कोय अक चीज के अंदर भी जलल पाकेअ हो (कमी हो गय) तो आदमी मुसलमान नहीं रहेता. कोय शप्स अगर तौहीद को समजता है मगर उस के मुताबिक अमल नहीं करता तो वह किरओन और एब्लीस वगैरह की तरह सर्कश (बडा नाइर्मान) काकिर है.

इस बारे में बहुत से लोग गलतइहमी में मुब्तला रहेते हैं. केहते हैं के हम जानते हैं के इलां बात हक है. हम उस का एकरार भी करते हैं. लेकिन उस पर अमल नहीं कर सकते. अपने एलाके के लोगों की मुजालिहत कर के गुजारा करना हमारे लिये मुशिकल है. इसी तरह के दीगर उजर भी वह पेश करते हैं. शायद नहीं जानते के काकिरो के बडे बडे सरदार भी हक को पेह्यानते थे और

ઇસી તરહ કે હીલેબહાને મેં પડ કર હી વહ હક્ક કો છોડે હુએ થે. જેસા કે અલ્લાહતઆલા કા ઇશ્દિ હૈ : “ઉન્હોને અલ્લાહ કી આયતોં કો થોડી સી કીમત પર બેચ ડાલા.” (સૂરહ તૌબહ આયત : ૯)

નીઝ ફરમાયા : “વહ (મુહમ્મદ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વ સલ્લમ કો) એસા પેહ્યાનતે હૈ જેસા અપને બેટોં કો.” (સૂરહ બકરહ આયત : ૧૪૬)

લેકિન અગર કોઈ શખ્સ તૌહીદ કો સમજે બગેર, યા દિલ મેં ઇમાન રખ્ખે બગેર સિર્ફ ઝાહિર મેં તૌહીદ પર અમલ કરતા હૈ તો વહ મુનાફિક હૈ જો કાફિર સે ભી બદતર હૈ. ઇશ્દિ બારી તઆલા હૈ : “બેશક મુનાફિક જહન્નમ કે સબ સે નિચલે દર્જે મેં રહેંગે.” (સૂરહ નિસાઅ આયત : ૧૪૫)

યે મસ્અલા ઇન્તિહાઇ અહમ ઓર તવીલ (લંબા) હૈ. ઇસ કી અહમિયત કા અંદાઝા આપ કો ઉસ વક્ત હોગા જબ ઇસ સિલ્સિલે મેં લોગોં કી બાતોં પર ગૌર કરેંગે. યુનાન્યે બઅઝ લોગ તો આપ કો એસે મિલેંગે જો હક્ક કો પેહ્યાનતે તો હૈ લેકિન દુન્યાવી જાહ વ મન્સબ (ઓહ્ટે) ઓર જાન વ માલ કે કમ હો જાને કે ડર સે ઇસ પર અમલ નહીં કરતે હૈ. ઇન સે અગર પૂછા જાએ કે તૌહીદ કે બારે મેં આપ કા કયા અકીદહ હૈ ? તો ઉસ કા કોઈ ઇલ્મ ઉન કે પાસ નહીં હોતા.

લિહાઝા એસી સૂરત મેં કુર્આને કરીમ કી દો આયતેં ખાસ તૌર સે આપ પેશોનઝર (સામને) રખ્ખે. પેહ્લી આયત યે હૈ (અલ્લાહતઆલા ફરમાતા હૈ) : “બહાને મત બનાઓ, તુમ ઇમાન લા કર, ઇમાન કા દઅ્વા કર કે ફિર કાફિર હો ગએ.” (સૂરહ તૌબહ આયત : ૬૬)

ઇસ આયત મેં રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વ સલ્લમ કે સાથ રૂમિયોં સે ગઝ્વા કરનેવાલે બઅઝ સહાબહ રદિયલ્લાહુ અન્હુમ કો જબ ઇસ વજહ સે કાફિર કેહ દિયા ગયા કે ઉન્હોને હસી મઝાક કે તૌર પર એક કુફરિયા બાત અપની ઝબાન સે નિકાલ દી થી તો ફિર સોચેં કે ઉસ શખ્સ કા કયા હાલ હોગા જો કિસી કી દિલજોઇ (ખુશ કરને કે) લિએ યા માલ વ મન્સબ (ઓહ્ટે) કે કમ હો જાને કે ડર સે કુફ્ર કી બાતેં કેહ્તા યા ઉસ પર અમલ કરતા હો ?

ઇસ સિલ્સિલે કી દૂસરી આયત અલ્લાહતઆલા કા યે ઇશ્દિ હૈ : “જો શખ્સ ઇમાન લાને કે બઅદ અલ્લાહ કે સાથ કુફ્ર કરે, વહ નહીં જો કુફ્ર પર મજબૂર કિયા જાએ ઓર ઉસ કા દિલ ઇમાન પર જમા હુવા હો.”

(સૂરહ નહલ આયત : ૧૦૬)

ઇસ આયત મેં અલ્લાહતઆલાને સિફ ઉસ શખ્સ કો કાબિલે મુઆફી બતાયા હૈ જિસે કુફર પર મજબૂર કર દિયા ગયા હો મગર ઉસ કા દિલ ઇમાન પર જમા હુવા હો. ઇસ કે ઇલાવા બાકી સારે લોગ કાફિર હૈ. ખ્વાહ ઉન્હોને ડર કી વજહ સે કુફર કા કલિમા અપની ઝબાન સે નિકાલા હો યા કિસી કી દિલજોઇ કે લિએ. વતન યા અહલ વ અયાલ ઓર માલ વ મતાઅ કી મુહબ્બત મેં કુફિયા બાત કહી હો યા મઝાક કે તોર પર યા કિસી ઓર મક્સદ કે તેહત (લિએ), બહરહાલ વહ કાફિર શુમાર હોંગે, જેસા કે મઝકૂરા બાલા આયત ઇસ મસ્અલે પર દર્જ ઝૈલ પેહલૂવોં સે દલાલત કરતી હૈ.

(૧) “વહ શખ્સ જિસે કુફર પર મજબૂર કર દિયા ગયા હો.” (સૂરહ નહલ આયત : ૧૦૬) કે જુમલેહ સે ષાબિત હોતા હૈ કે અલ્લાહતઆલાને સિફ મજબૂર કિએ ગએ શખ્સ કો કુફર સે મુસ્તખ્ના (અલગ) કરાર દિયા હૈ ઓર યે સબ જાનતે હૈ કે ઇન્સાન કો સિફ ઝબાન યા અમલ પર મજબૂર કિયા જા સકતા હૈ. દિલી એઅતિકાદ પર કોઇ ભી શખ્સ કિસી કો મજબૂર નહીં કર સકતા.

(૨) મઝકૂરા આયત કી દલાલત કા દૂસરા પેહલૂ યે હૈ કે ઇસ કે ફોરન બઅદ અલ્લાહતઆલાને ફરમાયા : “યે ઇસ લિએ હોગા કે ઉન્હોને દુન્યા કી ઝિંદગી કો આજિરત કે મુકાબલે મેં પસંદ કિયા.” (સૂરહ નહલ આયત : ૧૦૭)

ઇસ આયત મેં અલ્લાહતઆલાને યે સરાહત ફરમાદી હૈ કે યે કુફર ઓર અઝાબ, એઅતિકાદ યા જહાલત યા દીન સે નફરત યા કુફર કી મુહબ્બત કી વજહ સે નહીં બલકે ઇસ વજહ સે હોગા કે ઉસ કે અન્દર ઉન્હેં દુન્યા કી લઝ્ઝત નઝર આઈ જિસ કો ઉન્હોને આજિરત પર તર્જીહ (ઝિયાદહ એહમિયત) દી.

વલ્લાહુ સુબ્હાનહુ વ તઆલા અઅલમુ.....

વલ્ હમ્દુલિલ્લાહિ રબ્બિલ્ આલમીન, વ સલ્લલ્લાહુ અલા નબીચ્ચિના મુહમ્મદ વ અલા આલિહી વ સહ્બિહી અજ્ઘન, આમીન !

(અલ્લાહતઆલા પાક હૈ જો બુલંદ વ બર્તર હૈ ઝિયાદહ જાનતા હૈ.....

ઓર તમામ તઅરીફેં સારે જહાનોં કે રબ કે લિએ હૈ, અલ્લાહતઆલા કી રહ્મત હો હમારે નબી મુહમ્મદ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વ સલ્લમ પર ઓર આપ કી આલ ઓર તમામ સહાબા પર, આમીન !)

ઈસ્લામીક ઈન્ફર્મેશન સેન્ટર- કચ્છ દ્વારા પ્રકાશિત પુસ્તકો

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	લેખક
૦૧	મુસલમાન કા અકીદા	શૈખ મુહમ્મદ બીન જમીલ ઝૈનુ
૦૨	ગુનાહે કબીરા	ઈમામ શમ્સુદ્દીન ઝહબી (રહ.)
૦૩	દુઆએ	મૌ. શાહીદ જામઈ 'રાજકોટી'
૦૪	સ્ત્રીઓના વિશિષ્ટ મસાઈલ	શૈખ સાલેહ અલ ફઉઝાન
૦૫	મીલાદુન્નબી અને મોહબ્બતે રસુલ (સ.અ.વ.)	ડૉ. ફઝલૂર્હમાન મદની
૦૬	સીરતે નબવી અને ગેરઈસ્લામી વિચારો	મૌ. અબુલઆસ વહીદી
૦૭	નમાઝ ની સઝાવટ રફ્થૈન	મૌ. મુહમ્મદ ઈસ્માઈલ સામરોદી
૦૮	યા અલ્લાહ મદદ	હાફીઝ સલાહુદ્દીન યુસુફ
૦૯	અહમ દીની અસ્બાક	શૈખ અ.અઝીઝ બિન અબ્દુલ્લાહ બિન બાઝ
૧૦	રોઝાના મસાઈલ	મૌ. મુહમ્મદ ઈકબાલ કીલાની
૧૧	ઝકાતના મસાઈલ	મૌ. મુહમ્મદ ઈકબાલ કીલાની
૧૨	હજજ અને ઉમરાહના મસાઈલ	મૌ. મુહમ્મદ ઈકબાલ કીલાની
૧૩	ફઝાઈલે કુર્આન મજીદ (સંક્ષિપ્ત)	મૌ. મુહમ્મદ ઈકબાલ કીલાની
૧૪	દુઆ કે મસાઈલ	મૌ. મુહમ્મદ ઈકબાલ કીલાની
૧૫	ખુશગવાર ઝિંદગી કે ઈસ્લામી ઉસુલ	હાફિઝ મુહમ્મદ ઈસ્હાક ઝાહિદ
૧૬	તફ્સીર સૂર: બકરહ	હાફીઝ સલાહુદ્દીન યુસુફ
૧૭	કલમાએ તોહીદ કા મઅના...	મુહમ્મદ ઉમેર ટોંકી
૧૮	શિન, જાદુ ઓર બિમારીઆ દૂર કરનેકા ઈલાજ	સઈદ બિન અલી બિન વહફ અલ કહતાની
૧૯	દીન કે તીન અહમ ઉસુલ	શૈખુલ ઈસ્લામ મુહમ્મદ અત્તમીમી
૨૦	એહલે સુન્નત વલ જમાઅત કા અકીદા	શૈખ મુહમ્મદ બિન સાલેહ અલ ઉષૈમીન
૨૧	બેનમાઝી કા અંજામ	શૈખ મુહમ્મદ બિન સાલેહ અલ ઉષૈમીન
૨૨	નબી (સ.અ.વ.) કી નમાઝ	શૈખ અબ્દુલ અઝીઝ બિન અબ્દુલ્લાહ બિન બાઝ રહ.
૨૩	ઈસ્લામ ખાલિસ કયા હૈ?	મુહમ્મદ ઈસ્માઈલ ઝતારિગર
૨૪	સિરતુન્નબી (સ.અ.વ.) કિવીઝ	અબુ વસીમ અબ્દુર્હીમ મુહમ્મદી
૨૫	સહીહ ઈસ્લામી અકીદા ઓર ઉસકે મનાફી ઉમૂર	શૈખ અબ્દુલ અઝીઝ બિન અબ્દુલ્લાહ બિન બાઝ રહ.
૨૬	ગેરુલ્લાહ સે ફરિયાદ...	શૈખ અબ્દુલ અઝીઝ બિન અબ્દુલ્લાહ બિન બાઝ રહ.
૨૭	જાદૂ ઓર કહાનત કી હૈસિયત	શૈખ અબ્દુલ અઝીઝ બિન અબ્દુલ્લાહ બિન બાઝ રહ.